Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

निराला साहित्य में मानवतावादी तथा जनवादी दृष्टि

डॉ. बालेश्वर प्रसाद*

*ऐसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी) अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश –निराला के साहित्य में मानव-प्रेम और करुणा का विशेष स्थान है। वे प्रत्येक मनुष्य के सम्मान और अधिकारों के पक्षधर थे। उनकी प्रसिद्ध कविताएँ 'भिक्षुक' वह तोड़ती पत्थर और 'सरोज-स्मृति' मानव जीवन के दुख, संघर्ष और संवेदनाओं का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। इन रचनाओं में उन्होंने पीड़ित और असहाय लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की है। निराला ने अपने साहित्य में आम जनता के जीवन, उनकी समस्याओं और शोषण को प्रमुखता दी। उन्होंने सामाजिक असमानता, रूढ़ियों और अन्याय का विरोध किया। उनकी रचनाएँ जनता की आवाज बनकर सामने आती हैं और सामाजिक परिवर्तन का संदेश देती हैं। वे श्रमिकों, किसानों और वंचित वर्ग के संघर्ष को साहित्य का विषय बनाते हैं।

निराला का साहित्य केवल सौंदर्य और भावनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें मानवता, समानता और सामाजिक न्याय की सशक्त चेतना भी विद्यमान है। मानवतावादी और जनवादी दृष्टिकोण के कारण उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है तथा समाज को संवेदनशील और न्यायपूर्ण बनाने की प्रेरणा देता है।

प्रस्तावना – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य के प्रमुख छायावादी कवि होने के साथ-साथ मानवतावादी और जनवादी चेतना के सशक्त साहित्यकार भी थे। उनके साहित्य में समाज के गरीब, शोषित, दलित और उपेक्षित वर्ग के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। उन्होंने मनुष्य को जाति, धर्म और वर्ग से ऊपर उठकर देखा तथा समानता, स्वतंत्रता और न्याय का समर्थन किया।

'विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सजाजिते नृजित उर्वशजिते।
अश्वजिते गोजिते अब्जिते भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम्।।'[1]

प्राचीन आर्य्यावर्त के प्रथम सम्राट इन्द्र और दाशराज्ञ युद्ध का वर्णन करते हुए निराला कहते हैं-'उसी समय से एक वर्ग उपेक्षित, बुभुक्षित और तिरस्कृत रहा है। मनुष्य स्वभाव से दयालु और दानशील है। मनुष्य की परिभाषा ही है जो दूसरों के काम आए। अपना जीवन मानवहित, जनहित, राष्ट्रहित और गिरे हुए को उठाने वाला प्राणी ही मनुष्य है।'[2]

भारतीय नव जागरण और अभ्युन्नति के साथ राजाराममोहन राय, क्षितिमोहन सेन, केशवचन्द्र सेन, रानाडे, स्वामी दयानन्द, बंकिमचन्द्र चटर्जी, स्वामी रामकृष्ण, एनीवेसेण्ट, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी सहजानन्द, बालगंगाधर तिलक, गाँधी, अरविन्द आदि का नाम जुड़ा हुआ है। इन्हीं युग पुरुषों से प्रेरणा प्राप्त कर महाप्राण निराला ने अपने मानवतावादी और जनवादी धारणाओं को निर्धारित किया। रूस की क्रान्ति तथा तत्कालीन वैश्विक दशा का भी निराला पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

'गुरू हथौड़ा हाथ
करती बार-2 प्रहार'

कहकर निराला जी ने अपनी क्रान्तियात्रा का शुभारंभ किया। हिन्दी भाषा और साहित्य को आत्म-दान से समृद्ध करना निराला के काव्यजीवन की सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा रही है। जन-संवेदना से सम्पृक्त अपने काव्य पर गर्व का अनुभव करते हुए कवि 'जनता का' 'जन-ताका' के प्रयोग में अलंकरण और बातचीत का अद्वैत स्थापित करते रहे। आचार्य नलिन विमोचन शर्मा के शब्दों में-

'हिन्दी को इसलिए राष्ट्रभाषा माने क्योंकि इसमें निराला जैसा कवि है।'

निराला असाधारण काव्यवस्तु है। भूख, पीड़ा, संत्रास अभाव, विपन्नता, रोगग्रस्तता, उपेक्षित, क्षुधित, पीड़ित जनों की व्यथा को निराला ने निकटता से अनुभव किया। 'तुम पथ हो मैं हूँ रेणु' कहने वाले निराला दुर्बलों की दुर्दशा देखकर रो उठते। हिन्दी साहित्य में निराला का अवतरण एक क्रान्तिकारी घटना है। उनके व्यंग्य एवं विद्रोह की यात्रा उनके पुरुषार्थ का जीवन्त दस्तावेज है। निराला का व्यंग मात्र प्रतिक्रिया नहीं है। पीड़ित मानवता का दर्द उनकी चेतना को झकझोर कर रख देता है। वे व्यथित होकर रोते है, लेकिन रोकर बैठ जाना उनकी प्रवृत्ति के विरूद्ध है। उस दर्द के निवारण के लिए वे प्रपीड़क की जमीन को हिला देने वाला व्यंग्य बोलते हैं। वे अपने सम्पूर्ण पुरुषार्थ के साथ पीड़ादायक अवस्था को बदलने के लिए विद्रोह का संकल्प लेते है और चल पड़ते है। निराला की यह विद्रोह परक जनवादी यात्रा पीड़ा से शुरू होती है। यह आक्रोश क्रान्ति के बिन्दु तक पहुँचती है। वहाँ निराला अकेलापन अनुभव नहीं करते अपितु उसकी पूर्णता के लिए सबका आवाहन करते है। महामानव निराला को आजीवन कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। निराला कालिदास की भाँति हमेशा आशान्वित रहे। 'दु:ख ही जीवन की कथा रही' कहने वाले निराला जानते है कि दु:खवाद के मूल में करूणा ही है। रवीन्द्रनाथ ने बाउलों के प्रभाव में आकर जब कहा कि 'कवि आमि ओदेर दले' तो निराला को लगा कि वे निश्चय ही युग पुरुष हैं। निराला ने कहा-

'जिस सुर में तुमने बाँधे थे इस वीणा के तार सखे,
बार-बार वे उतर गये है, बिखरे बारंबार सखे,
कवि तुमने जो राग बजाना चाहा वह क्या मेरे बस का?'

निराला ने जनसेवा का व्रत लिया और हृदय से उस विराट को नमस्कार

कर रवीन्द्र के शब्दों को दुहराया–

'वैराग्य साधनेर जेहि
सेई आभार मुक्ति नाई।'

अपने अवसाद के दिनों में निराला रवीन्द्र का यह गीत गाते रहते थे–

'ये तोरे पागल बले,
ता' रे तुई वलि सूने किहु।
आज के तोरे के मन भवे
अंग से तोर धूलो देबे,
काल से प्रति माला हाते
आ सूबे रे तोर पिहु–पिहु।।
आज के आपन मानेर भरे
धाक् से 'ब' से गदिर 'पटे'
वाल् के प्रेमे आसबे नेमे,
क' र्बे से ता' र माथा नीचु।।'[3]

'हो सकता है कि इस प्रकार अकेले सच्चाई के मार्ग पर चलने वाले को लोग शुरू–शुरू में पागल कहने लगें। तुम्हीं कहो किस महापुरुष को लोगों ने पागल नहीं कहा है? किस कर्मयोगी ने निर्यातन नहीं सहा है। मेरी मान तू बस चलता चल। जो तुझे पागल कहे उसे तू कुछ भी मत कह। आज जो तुझे कैसा कुछ समझकर धूल उड़ता है, वही कल प्रात:काल हाथ में माला लिए तुम्हारे पीछे–पीछे फिरेगा। आज चाहे वह मान करके गद्दी पर बैठा रहे; किन्तु कल (निश्चय ही) वह प्रेमपूर्वक नीचे उतरकर तुझे अपना शीश नवाएगा' और मानवतावादी निराला के साथ ऐसा ही हुआ। जीवन पर्यन्त अभाव में जीने वाले निराला का साहित्य आज जन कण्ठाहार बना हुआ है। इस अमृत–मंजूषा को कालजयी स्वरूप प्राप्त हो चुका है। निराला जानते थे कि सत्य प्रकाश धर्मा है, वह छिपाकर रोक नहीं रखा जा सकता। कुछ लोग ऐसे होते है जो समझते है कि प्रत्येक नया विचार सनातन प्रथा को बर्बाद कर देगा, संस्कृति को रसातल में पहुँचा देगा। मनुष्य ने इतिहास से कितना कम सीखा है। सम्पत्ति–मद से महत लोग दो दिन आगे की बात भी कहाँ देख पाते है। वे अपनी शक्ति पर जितना भरोसा रखते हैं, उसका आधा भी उन पर नहीं रखते, जिनकी कणमात्र शक्ति पाकर वे अपने को शक्तिशाली समझा करते हैं। वे पद–पद पर 'ऐसा कभी नहीं हो सकता, कहकर प्रत्येक प्रगति का विरोध करते हैं। लेकिन अनादि काल से यह सर्वविदित सत्य है कि जिसे ऐसे मदमत्त शक्तिशाली लोग असंभव कहा करते है, वह वस्तुत: असंभव नहीं है। रवीन्द्रनाथ की तरह निराला भी लक्ष्य प्राप्ति को इतनी बड़ी बात नहीं मानते। उस दिशा में चल देना ही बड़ी बात है। क्या हुआ जो मैं पार नहीं जा सका। मेरी आशा की नैया डूब गई तो हर्ज क्या, वह हवा तो शरीर में लग रही है, जिससे नाव चल रही थी। हाथ के पास अपने इर्द–गिर्द जो कुछ पा रहा हूँ, वही बहुत है। यदि कुछ काम है तो उसे करना है, यह विश्वास ही असली पौरुष है। जिस छुआ–छूत, जाति–पाँति तथा समाज के रूढ़िवादी तत्तवों को नष्ट करने का प्रयास आज सरकारी कानून और राजनेताओं के द्वारा किया जा रहा है, उसकी शुरूआत महाप्राण निराला ने नब्बे वर्ष पहले ही कर दी थी। अपने जीवन के आरंभ से ही इन्होंने समाज के ढकोसलों को ढहाना शुरू किया। निराला स्वयं लिखते है कि– 'मैं शुरू से विरोध के सीधे रास्ते चलता रहा है। .....मैं बचपन से आजादी–पसंद था। दबाव नहीं सह सकता था। खासतौर से वह दबाव, जिसकी वजह न मिलती हो।'

महाकवि निराला के जीवन–काल में खास बात यह रही कि इन्होंने समाज का जो विरोध किया, वह केवल अपने ही बल–बूते पर और उसका परिणाम भी स्वयं ही भुगतने के लिए उद्यत रहे। किसी भी ढकोसले का विरोध करने के लिए इन्होंने दूसरों को उपदेश नहीं दिया। समाज–सुधारक बनने का निराला ने कभी प्रयत्न नहीं किया और न नेताओं में अपना नाम लिखाना चाहा, जो दूसरों को तो किसी अछूत के हाथ का पानी पीने के लिऐ प्रोत्साहित करते है, पर स्वयं हरिजन की परछाई देख, बगले झाकने लगते है। निराला सबसे अलग थे। उस समय निराला आठ वर्ष के थे, जब आपने अपने जनवादी, मानववादी होने का परिचय दिया था। निराला का यज्ञोपवीत कराने पिता श्री गढ़ाकोला आए हुए थे। गाँव में एक ताल्लुकेदार थे भगवानदीन दूबे। उन्होंने एक वेश्या रख ली थी। उस वेश्या के चार लड़के और एक लड़की हुई। जब तक ताल्लुकेदार रहे ग्राम समाज ने चूँ तक नहीं की। सभी दूबे जी के घर आते–जाते खाते–पीते रहे। दुबे जी के अवसान के बाद वेश्या को सन्ततियों के साथ कुछ खेत–ताग देकर अलग कर दिया गया। निराला उस वेश्या के घर दादरा, टप्पा, ठुमरी सुनने जाया करते थे। उसका छोटा लड़का फतेहबहादुर निराला का मित्र बन गया था। लड़की परागा भी निराला से घुली–मिली थी। एक दिन फतेहबहादुर ने कहा – 'अभी तुम हमारे यहाँ का खाते हो, जब जनेऊ हो जाएगा, न खाओगे।'

निराला के पिता ने भी कहा– 'आगे से उस पतुरिया के घर नहीं जाना, न ही कुछ खाना।'

निराला को आश्चर्य लगा कि जब आज जा–खा सकते है तो कल क्यों नहीं?

लड़की परागा ने भी कहा–'भैया! आगे से तुम बदल शुकुल के यहाँ महुए की लपसी खाओगे, हमारे घर का हलुआ नहीं।' निराला ने निर्णय लिया 'नहीं, मैं हलुआ छोड़ लपसी नहीं खाऊँगा।' जनेऊ के बाद एक दिन जब फतेह बहादुर कुँए पर स्नान कर रहे थे, निराला ने कहा–'पानी पिलाओ'। फतेहबहादुर ने डरते–डरते डोल से पानी पिलाया और निराला को लगा मानो किला फतेह कर लिया हो।

लोगों ने, जिन्होंने देखा निराला की शिकायत तो कि किन्तु शिशु जानकर माफ कर दिया। पिता ने खूब कुटम्मस की। देह दर्द से फटा जा रहा था। दो–तीन दिन में जैसे ही दर्द गया, निराला खाने–पीने के लिए पतुरिया के आँगन में पहुँच गए। गाँव वालों ने बडा बवाल मचाया, पर निराला अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। समाज के इस अंधे कानून के प्रति विद्रोह तभी से अपनी जड़े जमा गया।'[4]

निराला ने तिलक–दहेज का उस समय विरोध किया जब समाज इसे पागलपन मानता था। अपनी लड़की सरोज की शादी आपने अपने ही एक शिष्य शिवशेखर द्विवेदी से बिना दान–दहेज के की तो पूरे गाँव में खलबली मच गई।

नातेदारों तक को न्योता नहीं दिया और न बारात आई। न लग्न, न तिथि, न तिलक, न भोज–भात। निराला ने रूढ़िग्रस्त संस्कारों को घर से ही तोड़ना शुरू किया और शिवशेखर से कहा–

'तुम करो व्याह, तोड़ता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथम
लग्न के पढ़ूँगा स्वयं मन्त्र
यदि पण्डित जी होंगे स्वतंत्र।'

इस तरह निराला का चिंतन, निराला का दर्शन मानववादी है। वे साहित्य को जन कल्याण का माध्यम मानते है। निराला अपने ओजगुण के लिए

प्रसिद्ध है। निराला ने लड़कपन में बंग भंग–विरोधी स्वदेशी आन्दोलन देखा। उन्होंने उन वीर युवकों की कहानियाँ पढ़ी और सुनी, जिन्होंने सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने हेतु अपने प्राण अर्पित किये। भारत के अनेक पूँजीपति तथा उनके प्रतिनिधि राजनीतिज्ञ सोचते थे कि अंग्रेजों के सहयोग से ही भारत का औद्योगीकरण संभव है। निराला ने 'सुधा' पत्रिका में अपनी संपादकीय टिप्पणी में लिखा कि–

'महात्मा जी के आन्दोलन के बाद से इंग्लैण्ड के व्यवसायी भारत से खूब सजग रहते है और ये पूँजीपति ही चूँकि प्रकारान्तर से इंग्लैंड के विधाता है, इसलिए ये इतने उदार होंगे कि अपनी भलाई भूलकर भारत की भलाई का खयाल करेंगे, यह बिलकुल, भ्रान्त धारणा है। भारत अंग्रेजी माल खपाने के लिए अंग्रेजों का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहाँ से कच्चे माल की जितनी पैदावार होती है, उसका अधिकांश वहीं के व्यापारियों के हाथ लगता है, जिससे एक–एक के सैकड़ों वसूल होते है।'[5]

जब हम निराला के काव्य–संसार में प्रवेश करते हैं तो हमें मानवतावादी दृष्टिकोण के अनेक विषय अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। 'कुकुरमुत्ता' में निराला ने दीनों और दलितों के एक वर्ग का चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त निराला ने जनवादी चेतना को केन्द्र में रखते हुए दीन और दलितों पर कई कविताओं का सृजन किया है। 'दीन छोड़ दो जीवन यों न मलो' 'दलित जन पर करो करुणा' शीर्षक कविताएँ निराला ने दलित–जीवन के समर्थन में लिखी हैं। 'दीन' कविता में निराला ने निम्न वर्ग की घनीभूत पीड़ा का चित्रण करते हुए लिखा है–

'सह जाते हो
उत्पीड़न की क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न,
हृदय तुम्हारा दुर्बल होता भग्न,
+ + +
अपने उर की तप्त व्यथाएँ,
क्षीण कण्ठ की करुण कथाएँ,
कह जाते हो।'[6]

इसके साथ ही निराला महंगू, झींगुर जैसे दलित पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाते हैं। दलितों के पक्ष में खड़े होकर वे क्रांति का प्रबल संदेश भी देते हैं–

'जल्द–जल्द पैर उठाओ, आओ–आओ,
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी पासी चमार तेली
खोलेंगे अँधरे का ताला
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।'[7]

निराला राष्ट्र की मुक्ति के साथ सामान्य जन मुक्ति के पक्षधर थे। 'तुलसीदास' कविता में निराला की सांस्कृतिक चेतना का अजस्र प्रवाह दिखाई देता है, तो दिल्ली, यमुना के प्रति आदि कविताओं में राष्ट्रीयता का दूसरा रूप अतीत–वैभव के वर्णन के रूप में परिलक्षित होता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना भी जनवादी है, उसमें सामयिक चेतना आद्योपांत विद्यमान है। डॉ0 राजेन्द्र कुमार के शब्दों में – 'निराला के स्वाधीनता की अवधारणा वस्तुत: व्यक्ति को उस स्तर तक जागरुक और ज्ञान–सम्पन्न बनाने की है, जो स्वयं तो मुक्त हो ही, दूसरों को भी मुक्त कर सके। वे ऐसे मानव के निर्माण का सपना देख रहे थे, जो नियमों को बनाता है, नियमों से बनता नहीं।'[8]

इसी प्रकार 'रानी और कानी' प्रेम संगीत, खजोहरा, गर्भ पकौड़ी आदि कविताओं में व्यंग्य के कई स्तर हैं। उन्होंने 'स्फटिक शिला' में चित्रकूट यात्रा का नए ढंग से रेखांकन किया है। चित्रकूट के प्रति भारतीय समाज की पूज्य भावना को मिटा देने का विलक्षण काम यह कविता करती है। दलितों और शूद्रों के प्रति कवि की सम्यक् सहानुभूति यहाँ भी उजागर होती है–

'मैंने देखा बड़ा मैला
मन उसका समाज से
चोट खाई हुई वह राम जी के राज से
शूद्रों को मिला नहीं
जिनसे कुछ भी कहीं।'[9]

निराला का सम्पूर्ण साहित्य दीन–दु:खियों को समर्पित है। निराला–साहित्य एक कम्पास है जो भटके मुसाफिरों को राह दिखाता है निश्चय ही महामानव मरते नहीं, उनकी अक्षय कीर्तियाँ अमिट रहती, तभी तो डॉ0 राम विलास शर्मा जी ने कहा–

'यह कवि अपराजेय निराला,
जिसको मिला गरल का प्याला;
ढहा ओर तन टूट चुका है
पर जिसका माथा न झुका है;
शिथिल त्वचा, ढल ढल है छाती,
लेकिन अभी सँभाले थाती,
और उठाये विजय पताका
यह कवि है अपनी जनता का।'[10]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ऋग्वेद–महर्षि कृष्ण द्वैपायन, मैक्समूलर प्रकाशन, – 1849–1874, पृ0सं0 2–21–1
2. काव्यश्री, भूमिका, डॉ0 रमाकान्त पाठक, पृ0–21,राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
3. रवीन्द्र कविता कानन : पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रकाशक : निहालचन्द्र एण्ड को0 1, नारायण बाबू सेन, कलकत्ता, संस्करण–सं0 1985 वि0 पृ0स0–88
4. चतुरी चमार– निराला 1945 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0 63
5. सुधा, फरवरी 1930, संपादकीय टिप्पणी, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, पृ0स0–66
6. सं0 नंदकिशोर नवल : निराला रचनावली, भाग–1 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–136
7. सं0 नंदकिशोर नवल : निराला रचनावली, भाग–2 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–167–168
8. सं0 डॉ0 राजेन्द्र कुमार : स्वाधीनता की अवधारणा और निराला, अभिप्राय प्रकाशन, इलाहाबाद (प्रयागराज), पृष्ठ 125
9. सं0 नंदकिशोर नवल : निराला रचनावली, भाग–2 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–76
10. निराला रचनावली, डॉ0 रामविलास शर्मा, भाग–1 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0स0–128